Om Shanti
31.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, परमात्मा बाप है त्रिकालदर्शी ... फिर भी वो स्वयं धरती पर आ आप बच्चों को मनुष्य से देवता ... और देवता से आप समान बनाने का कार्य करता है।

बाप की नज़रों में तो सदा बच्चे ही समाये रहते हैं और बाप बच्चों के प्यार में समा जाता है। वतन में बैठ बच्चों का श्रृंगार करता रहता है ताकि बच्चे जल्दी से जल्दी बाप-समान बन बाप से मिलन मनाये ... क्योंकि बाप को भी बाप-समान बच्चों से मिलन मनाना अच्छा लगता है...।

अब तो बाप का भी घर जाने का समय समीप आ गया है अर्थात् शान्तिधाम का gate खुलने वाला ही है, परन्तु उससे पहले बाप स्थापना का कार्य पूरा करवा बच्चों के प्यार में बच्चों को full response दे ... अर्थात् बच्चों को तृप्त कर, फिर घर का दरवाज़ा खोलता है...।

बच्चे, सूक्ष्मवतन में बाप और बच्चों का मिलन बहुत अनोखा और आनन्दमय मिलन है। इसलिए अभी से ही उस मिलन के आनन्द का अनुभव करो।
जितना आप बाप (परमात्मा पिता) के प्यार में खोये रहोगे, उतनी जल्दी ही मिलन के आनन्द का अनुभव कर पाओगे।

परन्तु balance का अर्थात् बाप से मिलन और स्थूल सेवा ... जिसके निमित्त बाप ने आपको बनाया है, उसका विशेष ध्यान रखना ... क्योंकि बाप से सम्पूर्ण मिलन मनाने के लिए बाप-समान बनना पड़ेगा और जो आत्मा ज्ञान स्वरुप ... गुण स्वरुप ... और शक्ति स्वरुप होगी, वो ही बच्चा बाप-समान बन, बाप से मिलन का प्रत्यक्ष अनुभव कर, बाप के कर्तव्य को सम्पन्न करेगा।

इसलिए बच्चे, इस मार्ग में balance की अत्यधिक आवश्यकता है ... drama में आत्मा के द्वारा किये गये हर संकल्प ... बोल ... और कर्म में balance चाहिए...।

बस बच्चे, आप स्वयं पर full attention रख इस मार्ग पर चलते चलो, फिर जल्द ही मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सब बच्चों के अन्दर अब एक ही लग्न होनी चाहिए कि अब घर (परमधाम) जाना है ... "मुझ आत्मा को बाप के (पिता परमात्मा) संग घर जाना है।"

यही लग्न आपको सभी दुःखों से मुक्त कर बाप-समान बना देगी...।

देखो बच्चे, यह अन्त में जो भी परिस्थितियाँ आ रही है, वो आपको powerful बनाने और इस पाँच तत्वों की दुनिया से न्यारा करने आ रही हैं।

बस आप स्वयं को श्रेष्ठ आत्मा समझ परमात्मा बाप की याद में रहो, तब सभी तूफान तोहफा बन जायेंगे।

इसलिए powerful बन इनसे घबराओ मत बल्कि अपनी seat पर set हो सबकुछ बाप को समर्पित कर हल्के हो जाओ..., और जब भी इस तन का हिसाब-किताब आये तो इस तन को भी बाप को समर्पण कर बाप की याद में बैठ जाओ, फिर जल्दी ही बाप सब परिवर्तित कर देगा...।

देखो बच्चे, पुराना हिसाब-किताब जब चुक्तु होता है तो थोड़ी बहुत भोगना तो होती ही है, परन्तु तब बच्चों को सब कुछ भूल जाता है और केवल बाबा ही याद रहता है।

बस बच्चे, अमानत में खयानत मत करना...!
बाप की श्रीमत को 100% follow करने का attention रखना ... क्योंकि यह पुरुषार्थ सदा का है ... सदा का पुरुषार्थ ही आपको दुनिया से न्यारा कर बाप का प्यारा बनायेगा।

बस वो समय भी बाप की आँखों के सामने ही है और बहुत जल्दी आप भी अनुभव करोगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमपिता परमात्मा के संग को बढ़ाओ।

जितना आप स्वयं के और बाप के अनुभवी स्वरूप बनते हो, उतना ही आप बाप (परमात्मा पिता) के समीप आते जाते हो ... और यही अभ्यास ज्वालामुखी योग में परिवर्तन हो जाता है।

ज्वालामुखी योग अर्थात् भीषण पवित्र आग, जिसमें आप तो सम्पूर्ण पावन बन ही जाते हो और साथ ही साथ पूरे विश्व से भी पाप और विकारों का नाश हो जाता है और फिर सभी आत्मायें पवित्र बन घर (मुक्तिधाम) को जाती हैं...।

बच्चे, अब इस अभ्यास को बढ़ाओ क्योंकि विश्व में विकार, भष्टाचार, पाप अत्यधिक बढ़ चुका है।
सभी आत्माओं के दुःख और परेशानियां बढ़ती जा रही है...।

बस कुछ समय में ही आत्माओं का तड़पना स्पष्ट नज़र आने लग जायेगा।
परन्तु उससे पहले आप स्वयं को सम्पूर्ण रीति बाप को समर्पण कर बाप-समान बन जाओ...।

क्योंकि कुछ एक बच्चों के ज्वालामुखी याद से ही विश्व-परिवर्तन का काम होना है ... और इस कार्य में बहुत कम, माइनर-सा समय बचा है, क्योंकि चिंगारी लगने में टाइम लगता है परन्तु जब आग फैलने लग जाती है ... तो झट से सब भस्म कर देती है...।

इसी तरह दुनिया में दुःखों की ... परेशानियों की ... आग बढ़ रही है और दूसरी तरफ आप बच्चों की योग पॉवर भी बढ़ रही है।
बस आपकी पवित्र योग-अग्नि ही इस दुनिया की पाप-अग्नि को भस्म करेगी और उसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा...।

इसलिए बच्चे, अपने महत्व को समझ ... अपने श्रेष्ठतम् स्वमान में स्थित हो कर्म व्यवहार में आओ, तब ही तो बाप की कमाल पे कमाल शुरु होगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है अर्थात् स्वयं को शरीर की बजाए आत्मा समझना...।

आप बच्चों को हमेशा समझना है कि मैं आत्मा हूँ ... विशेष आत्मा हूँ ... साधारण नहीं हूँ ..., मेरे सारे कर्म विशेष होने चाहिए...।

बच्चे, ऐसा परिवर्तन तब ही सम्भव है जब आप स्मृति स्वरूप रहते हो अर्थात् आपको सदा याद रहे कि मैं Godly student हूँ ... मैं देव लोक में जाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... मैं विश्व-परिवर्तक हूँ...।

और जब आप स्मृति स्वरूप स्थिति में रहते हो तब आपके पुराने संस्कार आते तो हैं, परन्तु आप पर भारी नहीं होते ... अर्थात् आप अपने पुराने संस्कारों को संकल्पों में ही खत्म कर देते हो, वाचा और कर्मणा तक नहीं आने देते...।

जब आप विस्मृत होते हो, तब आपके पुराने संस्कार अपना काम कर जाते हैं, जिससे कि आपका हिसाब-किताब बन जाता है...!

बच्चे, अपना नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो, तब ही तो आप अपने पुराने हिसाब-किताब finish कर प्राप्तियों का अनुभव कर सकते हो...।
बस इसके लिए स्वयं पर attention की ज़रूरत है।

जब आप बच्चों के अन्दर परमात्मा बाप की knowledge समा जायेगी, तब आप अपना नया हिसाब-किताब नहीं बनाओगे...।
और जब आपके अन्दर बाप की याद समा जायेगी तब आप powerful बन जाओगे ... और आपके पुराने संस्कार जलकर भस्म हो जायेंगे।
तब ही आप बाप-समान, गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन पाओगे।

बच्चे, बाप की पढ़ाई की एक-एक point को महीनता से समझ, उसे अपने जीवन में apply करो।
ऐसे ही पढ़कर नासमझी में छोड़ मत दो...।

जितना आप बाप (परमात्मा पिता) की समझानी को ... बाप की याद को, अपने जीवन में सदा प्रयोग करते जाओगे, उतना ही आपको सफलता मिलेगी ... इससे आपका उमंग-उत्साह और खुशी बढ़ेगी।
फिर तो आप हल्के हो अपनी मंज़िल पर समय से पहले पहुँच जाओगे...।

परमात्मा बाप का यूँ आकर पढ़ाना - इसे आप हल्के रुप में मत लेना...।

जो इसकी importance को समझेगा, वो ही बाप-समान बन पायेगा अन्यथा वो अन्य आत्माओं से भी ज्यादा पश्चाताप की अग्नि में जलेगा और यही उसकी कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने देखा कि बच्चों के अन्दर काफी परिवर्तन आया है और बाबा बच्चों को देख-देख खुश हो बच्चों की महिमा के गीत गाते हैं - वाह बच्चे वाह..., वाह मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे वाह..., वाह मेरे नूरे रत्न बच्चे वाह...।

इसी तरह स्वयं पर attention रख, स्वयं में परिवर्तन की speed तेज़ करते जाओ, फिर natural ही आपका स्वरुप श्रेष्ठ हो जायेगा...।

अब समय अनुसार जिस भी negative वा व्यर्थ संस्कार का त्याग किया है, वो आपके जीवन से सदा के लिए, खत्म हो जाना चाहिए।

इसके लिए सदा बाप की श्रीमत कहो ... समझानी कहो, को अपने साथ रखना है। सदा सर्व समर्पण हो बाप पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त स्थिति में रहना है, परन्तु अलबेला नहीं होना...।

बाप पर 100% निश्चय रख निश्चिन्त रहने के लिए आप बच्चों को;
1) पहला - knowledgeful अर्थात् ज्ञान स्वरुप होकर रहना है।
2) दूसरा - powerful अर्थात् परमात्मा बाप को सदा अपने संग रखना है अर्थात् योग स्वरुप होकर रहना है।
3) तीसरा - गुण स्वरुप और शक्ति स्वरुप होकर रहना है अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित रहना है।

ज्ञान, योग, धारणा - इन तीनों को अपने जीवन में practically apply करने का attention रखना है।

जब आप स्वयं का अर्थात् आत्मा को स्वच्छ बनाने का attention रख पुरुषार्थ करोगे, तो बहुत जल्दी ही बाप की मदद से flawless diamond बन पाओगे।

बस बच्चे, परमात्मा बाप के सहयोग का सम्पूर्ण फायदा उठा, अपने सम्पूर्ण स्वरुप को धारण कर, विश्व-परिवर्तन का कार्य करो...।

बाप के साथ-साथ यह सारा विश्व अर्थात् यह स्थूल दुनिया आपके इंतज़ार में ही है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपने संकल्पों के महत्व को जान अपने संकल्पों की रचना करो।

• आप कुछ एक श्रेष्ठ ब्राह्मणों के संकल्पों से ही पुरानी दुनिया का अन्त और नई दुनिया की आदि होती है।
• आपके संकल्पों के द्वारा ही मुक्ति-जीवनमुक्तिधाम के gate खुलते हैं अर्थात् सभी आत्मायें पहले घर जाती हैं, फिर नम्बरवार अपना part play करने आती है।
• आपके संकल्पों के आधार से ही इस पाँच तत्वों की दुनिया में हर जड़ और चेतन चीज़ कार्य करती है...।

सो अब अपने संकल्पों के महत्व को समझो और व्यर्थ पर विशेष attention दो, क्योंकि व्यर्थ संकल्प आत्मा को भारी कर देते हैं और कई बार तो यह व्यर्थ का किचड़ा आत्मा को मैला भी कर देता है अर्थात् flawless बनने में बहुत बड़ा बाधक बन जाता है।

यदि बाप-समान बनना है, तो केवल positive संकल्पों की रचना करो जोकि बहुत थोड़े और शक्तिशाली होंगे...,अर्थात् स्वयं पर attention रखो।
बस इसके लिए बार-बार स्वयं को अपनी seat पर अर्थात् अपने स्वरूप पर ... अपने गुणों और शक्तियों की स्मृति रखनी है और हर हाल में बाप को संग रखना है ... पर इसके लिए भारी नहीं होना ... बस attention रखना है ... attention रखते-रखते बाप हमें अपने समान बना लेगा और फिर हमारे संकल्पों के द्वारा सतोप्रधान दुनिया की स्थापना हो जायेगी।

बस स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, समय अनुसार अब आप बच्चों की स्थिति एकरस होनी चाहिए।

यह स्थिति आपकी तब होगी, जब आपमें वैराग्य वृत्ति होगी अर्थात् एक ही लगन होगी कि अब घर (परमधाम) जाना है।

साथ ही साथ इस दुनिया में रहते आप बच्चों के अन्दर हर आत्मा के लिए चाहे वो कितनी भी अपकारी हो, उनके प्रति प्रेम, रहम और कल्याण की भावना होनी चाहिए ... क्योंकि वो आत्मा कल्प पहले मुआफिक अपना accurate role play कर रही है।

जैसे-जैसे आप आत्माओं के अन्दर शान्ति और पवित्रता की शक्ति बढ़ती जायेगी तो देव कुल की आत्मायें जो भविष्य में आपके समीप आने वाली आत्मायें हैं, वो automatically आपके समीप आती जायेगी ... और देर से आने वाली आत्माओं का automatically आपसे connection कम होता जायेगा ... अर्थात् वो स्वयं ही अपने संस्कार के वशीभूत, आपसे न्यारी होती जायेंगी।
और न्यारी होते हुए भी सदा आपकी शुभ-भावना और शुभ-कामना के कारण महसूस करेंगी कि यह तो श्रेष्ठ आत्मायें हैं ... हमसे अलग हैं...!
यह परिवर्तन अपने आप होगा, इसके लिए आप बच्चों को कुछ नहीं सोचना...।

बस, आपको तो हर आत्मा के संस्कारों को परख उसके according उनके सम्पर्क में आना है ... अर्थात् पहले से ही उनके part को जान present में रह शुभ-भावना, शुभ-कामना के साथ तुरन्त बिन्दी लगा, बिन्दी बन, बिन्दी बाप (निराकार शिव) के संग बैठ जाना है ... अर्थात् एक भी संकल्प ऐसी आत्माओं के प्रति व्यर्थ ना चले...।

आप हो विश्व-कल्याणकारी बच्चे, तो आपको पहले सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का कल्याण करना है, तो ही विश्व का कल्याण होगा...।

बच्चे, बस आपको knowledgeful बन स्वयं पर attention रखना है अर्थात् आपको स्वयं को देखते रहना है कि मेरी मन-बुद्धि कहाँ-कहाँ जा रही है...?
और फिर powerful बन अर्थात् बाप को अपने संग रख, मन-बुद्धि को ठीक direction पर लाने का पुरुषार्थ करते रहना है ... फिर विजय आप बच्चों की ही है...।

Present में रहने का मतलब ... पहले का बीता हुआ एक second, past है और आने वाला अगला second, future है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

24.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।
क्योंकि समय अनुसार एकाग्रता की शक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।

एकाग्रता की शक्ति वाला ही अचानक के paper में पास हो पायेगा।
यदि अभी-अभी पुरुषार्थ खत्म हो जाएं तो आपकी result क्या होगी...?

देखो बच्चे, पुरुषार्थ इसी तरह अचानक ही खत्म होगा और जिस बच्चे ने स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात् ऊँच स्वमान में स्थित रहने का और परमात्मा बाप को अपने संग रखने का अभ्यास किया होगा वो ही अचानक के paper में pass होगा। कई बच्चे सोचते हैं कि हम अचानक के paper में तो pass हो जायेंगे ... परन्तु अचानक का paper बहुत भयानक होगा ... जिस बात में आप कमज़ोर हो अचानक का paper उसी बात का आयेगा ... और वो समय स्वयं के साथ-साथ बाप की याद भुलाने वाला होगा ... वो समय ऐसा होगा जिसमें आप विस्मृत हो जाओगे अर्थात् आप स्वयं ही परिस्थिति में वा समय के बहाव में इतना ज्यादा उलझ जाओगे कि स्वयं की याद वा बाप की याद भूल जायेगी...!

परन्तु जो बच्चा अभी से ही अपने ऊँच स्वमान में स्थित होने की drill कर रहा है और साथ ही साथ अशरीरी बन अपने बाप के पास घर (परमधाम) जाने का भी पुरुषार्थ कर रहा है अर्थात् जो स्वयं को आत्मा realize कर बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने का पुरुषार्थ कर रहा है अर्थात् बाप की श्रीमत् पर चलने का 100% attention दे रहा है ... वो ही बच्चा अचानक के paper में बाप की मदद से PASS WITH HONOUR बन पायेगा...।

इसलिए बच्चे, स्मृति स्वरूप बनो। मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बढ़ाओ।

बाबा बार-बार कह रहा है कि अचानक ... अचानक ... अचानक ...।

तो इस बात की importance अर्थात् समय के महत्व को समझ ... बाप (परमात्मा शिव) की समझानी के महत्व को समझ ... पुरुषार्थ करो, अन्यथा बाप भी कुछ भी नहीं कर पायेगा...।

अन्तकाल आप अकेले हो जाओगे और वो घड़ी केवल पश्चाताप की होगी...!

इसलिए, सोच-समझकर अपने एक-एक second को सफल करो।
अभी का पुरुषार्थ ही अन्तिम विजय का आधार है...।

अच्छा । ओम् शान्ति ।

Om Shanti
23.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप ने बहुत महीनता से आप बच्चों को सारी पढ़ाई पढ़ा दी है, ताकि आप सहज रीति अपने लक्ष्य तक पहुँच सको ... परन्तु पढ़ना तो आप बच्चों को ही है।

बाबा ने तो विस्तार में आप बच्चों को बता ही दिया है कि जब तक सम्पन्न नहीं बनोगे तब तक परिस्थितियाँ आती रहेंगी। परन्तु आप बच्चों को ऊँच स्वमान में रह, बाप को संग रख हर paper को हल्का कर देना है..., और जिन बच्चों ने इसका अभ्यास किया है वो powerful बन इन परिस्थितियों को सहज ही पार कर रहे हैं और बहुत थोड़े से थोड़े समय में उनकी प्राप्तियाँ और बढ़ जायेगी...।

बाप तो पढ़ा सभी बच्चों को रहा है, सो इस पढ़ाई की importance को समझ इसे अपनी दिनचर्या में apply करो।

सबकुछ अर्थात् परिस्थितियों के साथ-साथ अपना स्वभाव भी बाप को समर्पित करो ... स्वयं पर attention रख बार-बार करो ... रुहानी drill करो ... बाप को संग रखने की भिन्न-भिन्न युक्तियां use करो।

देखो, जब आप निमित्त बन बाप की याद में बैठ जाते हो तो आपका सूक्ष्म स्वरूप तैयार होना शुरू हो जाता है।
बस दृढ़तापूर्वक जितना समय fix करते हो, उतना समय बैठो।

यदि इस यात्रा में थक जाओगे या घबराओगे तो आपकी यात्रा stop हो जायेगी।
फिर आप मंजिल पर कैसे पहुँचोगे...?

बस बच्चे, अपने मन-बुद्धि पर attention ही तो रखना है ... और दृढ़तापूर्वक बाप की याद में बैठना है...।

देखो, प्राप्तियां अपरमअपार है और जो बच्चे हार कर बैठ जायेंगे उनका पश्चाताप भी अपरमअपार है ... क्योंकि इस मार्ग पर करना कुछ भी नहीं है ... एक तो attention रखना है ... और दूसरा दृढ़तापूर्वक चलना है ... स्वयं पर निश्चय रखकर चलो...।

बहुत थोड़े से थोड़े समय में इस मार्ग में परिस्थितियों का force बढ़ जायेगा। इस कारण आत्मायें स्वयं में उलझ जायेंगी और चाहकर भी बाप को साथ नहीं रख पायेंगी...!
फिर देखो, जबकी अभी समय है तब भी बाप का सहयोग नहीं ले पा रहे हैं, तो आगे कैसे लेंगे...?

इसलिए दृढ़तापूर्वक स्वयं पर attention रखो, क्योंकि आप स्वयं के साथ कई आत्माओं के ज़िम्मेवार हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपने जो भी कार्य करना हो, बेफिक्र होकर करो।
बस आप परमात्मा बाप को हर पल अपने साथ रखो। बाप अपने सपूत बच्चों को किसी भी काम की मना नहीं करता है, और बाप अपने सपूत बच्चों पर 100% निश्चय रख, उन्हें विशेष पालना दे, उन्हें पढ़ाई पढ़ाता है।
क्योंकि बाप को पता है - यही मेरे विश्व-परिवर्तक बच्चे हैं...।
और जिस तरह बाप आप बच्चों पर निश्चय रख निश्चिन्त रहता है, ऐसी ही अवस्था आप बच्चों की भी होनी चाहिए...!

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कहता है कि इस समय drama की हर scene में आपका ही कल्याण समाया हुआ है और जब हर बात में है ही कल्याण तो आपको असोचता और हल्का रहना चाहिए ना...!

सोचो तो सही इतनी ऊँची बात कौन कह रहा है...?
स्वयं परमपिता परमात्मा ... जिसे दुनिया ढूंढ रही है और वो आपके पास आ आपकी पालना कर आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में आपकी मदद कर रहा है...!
तो फिर आप भी तो निश्चय रखो ना...!

निश्चय रखने पर ही निश्चिन्त स्थिति होगी, नहीं तो मन सोच-सोच कर भारी हो जायेगा...।

लौकिक में भी जब हर कार्य ठीक रीति या कल्याणकारी रीति से चल रहा हो तो वो जीव आत्मा खुश रहती है और कार्य को आगे बढ़ाती है ... और उसे अपने हर कार्य में सफलता भी मिलती है।

और यहाँ तो भगवान स्वयं आकर आप बच्चों को कह रहा है कि बच्चे निश्चिन्त रहो..., आपके हर कार्य को बाप कल्याण से भर देगा, चाहे इस समय वो आपको अकल्याणकारी लग रहा हो ... परन्तु आप इसमें अपना 100% कल्याण समझो क्योंकि इस समय बाप आपका ज़िम्मेवार बना है ... और बस आप अपना 100% attention स्वयं पर दे मंज़िल पर पहुँचो ... अन्यथा समय बीत जाने पर आप अपने ज़िम्मेवार स्वयं होंगे...!

हल्के रह drama के हर scene को साक्षी होकर देखो, और उसे बाप को समर्पण करने का पुरुषार्थ करते रहो। बस इतना-सा attention रखने पर भी बाप आपको full सहयोग देगा ... और बहुत ही थोड़े से थोड़े समय में बाप की कमाल पर कमाल शुरु हो जायेगी...।

बस, बाप की कमाल देखने के लिए निश्चिन्त अवस्था अत्यधिक ज़रूरी है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि स्वयं परमात्मा बाप इस धरा पर गुप्त रीति आकर परिवर्तन का कार्य शुरु करते हैं ... अर्थात् पहली पढ़ाई यही करवाते हैं कि तुम शरीर नहीं, आत्मा हो ... और यही पहला पाठ सारी पढ़ाई का सार है।

आप जितना-जितना अपने original स्वरूप का अनुभव करते जाते हो, उतना ही आप बाप (परमात्मा पिता) के समीप सम्बन्ध का अनुभव करते हो ... या जितना आप बाप के समीप रहने का पुरुषार्थ करते हो, उतना ही स्वयं के original स्वरूप का अनुभव बढ़ता जाता है..., क्योंकि परमात्मा बाप का सत्य संग बच्चों को बाप-समान बना देता है...।

बच्चे, बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है। जितना आप पढ़ाई पर attention रखते हो, उतना ही स्वयं को परिवर्तन कर विश्व का परिवर्तन कर देते हो।

और इस समय सभी बाप के नूरे रत्न ... दिलतख्तनशीन बच्चे अर्थात् माला के दाने बच्चे स्वयं के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं ... और उनके अन्दर एक ही लगन है कि हम भी जल्दी से जल्दी अपना number fix करें ... अर्थात् ऊँच पद के अधिकारी बनें, क्योंकि ऊँचे पद के अधिकारी बच्चे ही बाप-समान बन, बाप से सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव कर सकते हैं...।

देखो बच्चे, समय समीपता की तरफ बढ़ रहा है ... इसलिए ऊँचा पुरुषार्थ कर ऊँच पद के अधिकारी बनो ... नहीं तो कुछ ही समय के बाद यह पुरुषार्थ खत्म हो जायेगा ... और फिर कुछ नहीं कर पाओगे...!
इसलिए, अपने समय को 100% सफल करो।

आगे-आगे तो परिस्थितियां बढ़नी ही है, इसलिए इससे ना घबरा बाप को सर्व समर्पण कर बाप के संग जाकर बैठ जाओ ... और यही अभ्यास आपको परिस्थितियों से मुक्त कर बाप-समान बनायेगा ... और यदि इस पुरुषार्थ में अलबेले बनें तो कुछ नहीं कर पाओगे...!

जो बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण अर्थात् बाप पर निश्चय रख अपना सब कुछ बाप को समर्पण कर, निश्चिन्त रह, अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं, कुछ ही समय के बाद उनके सारे तूफान, तोहफे में परिवर्तन हो जायेंगे ... अर्थात् उनके द्वारा किये गये पुरुषार्थ की प्राप्ति ... स्थूल और सूक्ष्म प्रालब्ध ... प्रत्यक्ष अनुभव होगी, जोकि अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट अनुभव होगा ... और यही powerful परिवर्तन उनका number fix कर देगा।

इसलिए बच्चे, अभी भी जो थोड़ा बहुत समय बचा है वो सफल कर लो ... क्योंकि समय अचानक परिवर्तन होना है, और अचानक की घड़ी, अगली घड़ी भी हो सकती है...!

बस बच्चे, check and change की ज़रुरत है जोकि स्वयं पर attention रख, बाप के संग बैठ अर्थात् knowledgeful और powerful बनने से ही हो सकता है।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि मैं आत्मा powerful light के नीचे हूँ ... और मुझसे चारों तरफ light ही light फैल रही है ... यह light विश्व के कोने-कोने में फैल रही है, जोकि आत्माओं को और प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी अनुभव हो रही है।

बच्चे, यह आपकी light-might की किरणें ही विश्व-परिवर्तन का कार्य करेगी।

देखो बच्चे, इस समय इस light-might की किरणों की अर्थात् सकाश की विश्व को बहुत अधिक ज़रूरत है।
Drama का अगला scene बहुत भयानक और दर्दनाक है।
यह आपकी powerful सकाश प्रकृति के पाँचों तत्व शान्त भी करेगी और विश्व की सभी आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता भी दिखायेगी।

जब आप powerful मन्सा सेवा करते हो तो प्रकृति के साथ-साथ आत्माओं की भी सफाई होती है, जिस कारण एक बार दुनिया में हलचल बहुत बढ़ जाती है, परन्तु आपके powerful vibrations शीघ्र ही इस हलचल को समाप्त कर परिवर्तन का कार्य कर देती है।

इसलिए, हे दुःखहर्ता-सुखकर्ता ... विश्व में सुख-शान्ति के राज्य की स्थापना के निमित्त बनो..., और यह वो ही बच्चा बन सकता है जो अपने ऊपर attention रख बाप की हर श्रीमत का पालन कर रहा है।

जब आप स्वयं को इस सेवा में busy कर लेते हो तो आप अपनी परिस्थितियों से सहज ही मुक्त हो जाते हो क्योंकि आपको बाप के साथ-साथ सभी आत्माओं की भी दुआयें मिलती है, और यह दुआयें आपको बाप-समान बना देंगी।

इसके लिए आपको स्वयं के ... बाप (परमात्मा शिव) के ... और अपने कर्तव्य के स्मृति स्वरूप बनना है।

जब भी किसी भी आत्मा से मिलो या देखो तो आपके अन्दर हर आत्मा के प्रति बस कल्याण की ही भावना हो और कोई संकल्प नहीं...।

स्वयं को light समझ, light के नीचे रहना है और सभी आत्माओं को भी light ही light देनी है। चाहे तो मन्सा द्वारा ... चाहे तो दृष्टि द्वारा ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपकी हर बात में कल्याण समाया हुआ है, क्योंकि परमात्मा बाप कि अब आप पर direct नज़र पड़ी है।
बस आप अपना 100% दे पुरूषार्थ करते रहो ... और पुरूषार्थ भी क्या हैं ...?
मैं जो हूँ ... जैसा हूँ ... अर्थात् स्वयं को जान और मान, बाप को भी ठीक रीति पहचान उनके संग जाकर बैठ जाना हैं..., क्योंकि संग का ही रंग लगता है।

जितना-जितना आप स्वयं को बाप के संग अनुभव करोगे, उतना ही बाप-समान बनना आसान हो जायेगा।

बस, अब थोड़े का भी थोड़ा समय बचा है पुरूषार्थ का, इसलिए अब अपना समय व्यर्थ मत करो। बाप की श्रीमत प्रमाण चलो, तभी बाप आपका ज़िम्मेवार बनेगा...।

बच्चे, यह पुरूषार्थ हल्के रह बड़े उमंग-उत्साह के साथ करना है। जितना आप खुशी-खुशी पुरूषार्थ करोगे अर्थात् अपनी मंज़िल की हर रूकावट को खुशी-खुशी पार करके बाप के संग रहकर आगे बढ़ोगे, उतनी ही जल्दी मंज़िल पर पहुँचोगे।

बस,
• ना ही थकना है...
• ना ही अलबेले होना है...
• और ना ही दिलशिकस्त...,
हल्के रह आगे बढ़ना है...।

बस महसूस करो कि Supreme point of light की powerful light आप पर पड़ रही है...।

बच्चे, इसी छत्रछाया के नीचे रहो ... महसूस करो चारों तरफ light ही light ... light ही light है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि ... बच्चे, बाप के लिए गीत गाते हैं ... "किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ..."

देखो बच्चे, धन्यवाद करना अर्थात बाप पर 100% निश्चय रख, बाप की हर श्रीमत का समय अनुसार पालन कर अर्थात् ज्ञान-युक्त और योग-युक्त बन ... बाप-समान बन ... विश्व-कल्याण के कार्य को सम्पन्न करना।
बाप की उम्मीदों को अब पूरा करो। स्वयं में परिवर्तन करो...।

सारे विश्व की आत्मायें प्यासी नज़र से आप बच्चों को देख रही है कि कब हमारे इष्ट देव आयेंगे और हमारा कल्याण कर हमें घर (परमधाम) का रास्ता बतायेंगे। अब इसी स्मृति में रहो। यही बाप के प्यार का return है।

बाप के प्यार का return अर्थात् असोचता ... हल्का ... बेफिक्र ... खुश।
चाहे कुछ भी हो इतना अटूट निश्चय - मेरे साथ परमात्मा बाप है ... मेरा कोई बाल बाँका भी नहीं कर सकता...।

साथ ही साथ अपनी विजय पर भी 100% निश्चय रख अपनी मंज़िल पर पहुँचो।
यही है बाप का धन्यवाद करना...।

जब आपकी दिनचर्या बाप की श्रीमत के according होती है, तो परमात्मा बाप भी सूक्ष्म रुप से आपको अपनी बाहों में समा लेते हैं।

देखो, बाप को अपने आज्ञाकारी बच्चे बहुत प्यारे है। बाप भी अपनी नज़र ऐसे बच्चों से हटाता नहीं। हर पल बच्चों के संग रह बच्चों को सहयोग देता है...।

इतनी ऊँची दृष्टि से आप स्वयं को देखो। दुनिया का रचयिता स्वयं आ गया ... मेरी पुकार सुन, मेरा साथी बन गया..., और क्या चाहिए...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि ... मैं एक प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ ... प्रेम के सागर की संतान हूँ...।
अब मुझे सभी के साथ प्रेम पूर्वक रहना है ... और सभी को प्रेम की किरणें देनी है...।

जैसे, इस गुण की तरफ attention दिया, इसी तरह हर एक गुण की तरफ attention दे, उसे use करना है।
जब आप विशेष किसी गुण की तरफ attention देते हो और उसी के according आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा होती है, तब आपमें विशेष खुशी की प्राप्ति होती है।

अब धीरे-धीरे हर गुण से प्राप्त खुशी को बढ़ाओ।
जितना आप अपने व्यवहार में गुणों को use करने की attention देते हो, उतना ही आपको खुशी होती है और फिर आप naturally ही हर गुण के स्वरूप बन जाओगे।

बस, अभ्यास की तरफ attention रखना...।
यदि संस्कारवश किसी समय ... किसी गुण को ना अपना सको, या उसके विपरीत आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा हो जाती है ... तो भी घबराना मत ... बस attention को बढ़ा देना...।

बार-बार बाप (निराकार शिव) के पास बैठ ... बाप से शक्ति ले ... उमंग-उत्साह को बढ़ा, फिर से अपने कार्य में लग जाना...।
बस, इसमें अलबेले मत बनना...!

चाहे कोई भी तरह की आत्मा ... कोई भी तरह की परिस्थिति आये..., बस आपका attention स्वयं पर होना चाहिए।

आपके अन्दर एक ही संकल्प होना चाहिए कि मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है ... और मैं यह तभी बन सकता हूँ जब मैं सदा attention दे इन गुणों को use करूँगा, अन्यथा मैं सर्वगुण सम्पन्न नहीं बन सकता ... और ना ही माला का दाना...!

फिर मैं देखने वालों की list में आ जाऊँगा ... बनने वालों की नहीं...!

आपको सदा ध्यान में रखना है कि इस समय मैं अपना भाग्य लिख रहा हूँ और किसी भी आत्मा का स्वभाव-संस्कार और परिस्थिति मेरे भाग्य को कम नहीं कर सकती...!

इसलिए मुझे स्वयं पर full attention रख, अपने साथ परमात्मा बाप को संग रख अपना भाग्य लिखना है और जबकी मेरे साथ स्वयं भाग्य-विधाता बाप है तो मेरा तो भाग्य सबसे ऊँचा है...।
बस मुझे थोड़ा अपने ऊपर attention ही तो रखना है..., फिर मुझसे अधिक भाग्यवान इस दुनिया में कोई है ही नहीं...!

बस यही अभ्यास आपको बाप-समान बना देगा...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप सब बच्चों को प्रेम स्वरूप होकर रहना है..., क्योंकि आप हो प्रेम के सागर की संतान।

आपकी मन्सा, वाचा, कर्मणा और सम्बन्ध-सम्पर्क में प्रेम झलकना चाहिए।
जितना-जितना आप बच्चे प्रेम स्वरूप बनते जाओगे, तब आपके अन्दर हर आत्मा के प्रति चाहे वो आसुरी हो वा अपकारी हो अर्थात् हर प्रकार की आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना बढ़ती जायेगी...।

अब आप बच्चों के अन्दर प्रेम emerge रूप में रहना चाहिए।
• प्रेम स्वरूप आत्मा को किसी भी आत्मा के प्रति कोई complaint नहीं होगी।
• उनका मन, रहम और कल्याण की भावना से भरपूर होगा और आप बच्चों के शब्दों में भी मधुरता आती जायेगी...।
• प्रेम स्वरूप आत्मा के अन्दर मैं और मेरापन नहीं होता।
• प्रेम स्वरूप आत्मा वो ही बन सकती है, जिसकी दृष्टि भाई-भाई की हो ... क्योंकि प्रेम हमेशा सम्बन्ध में ही होता है।

इसलिए, अब आप बच्चों को स्वयं को आत्मा देखना है और अन्य को भी...।

जितना आप स्वयं को आत्मा realize करते जाओगे, उतना ही आपकी दृष्टि आत्मिक होती जायेगी ... और फिर अशरीरी बनना भी बहुत सहज हो जायेगा...।

बस, अब इस पुरुषार्थ को बढ़ाओ ... जैसे बाबा कहें, वैसे ही पुरुषार्थ करो।
फिर बाबा भी आप बच्चों को extra मदद दे आप-समान बना लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप-समान कहाँ तक असोचता बने हो...?

असोचता अर्थात ... कर्म और कर्म करने के बाद उससे प्राप्त result के संकल्पों से मुक्त ... अर्थात् बिल्कुल हल्का...।

बच्चे, कोई भी कर्म करने से पहले उस कर्म को बाप को समर्पण कर दो।

देखो, जबकि आप बच्चों ने स्वयं को ही बाप को सौंप दिया है ... तो आप द्वारा किया गया हर कार्य भी बाप का हो गया ना...!

बस, इसके लिए बिल्कुल सच्चा दिल चाहिए...।
सच्चे दिल से जब आप बाप को समर्पण हो जाते हो अर्थात् क्या, क्यों, कैसे से मुक्त हो जाते हो ... तो बाप भी आपकी अंगुली पकड़ आपको मंज़िल तक पहुँचा देता है।

देखो, लौकिक में भी जब कोई छोटा बच्चा कोई काम बाप की आज्ञा प्रमाण करता है, चाहे उसे करना ना भी आये ...
फिर भी, लौकिक बाप उसे बार-बार समझानी देकर करवाता है।
फिर बच्चे के स्वयं प्रति प्यार और विश्वास को देख खुद ही वो काम कर देता है।

यहाँ मैं, पारलौकिक बाप आपके दिल के हर संकल्प को जानता हूँ, फिर कैसे ना मैं अपने बच्चों की हर इच्छा को पूरी ना करूँ...!

बस, आप निश्चय रख निश्चिन्त रहो...।

Drama के हर scene में कल्याण समझो...।

आप सच्चे दिल से अपने हर संकल्प को बाप को समर्पण करने का अभ्यास करते रहो अर्थात् बाप की श्रीमत् प्रमाण चलने का पुरुषार्थ करते रहो।

कोई भी गलती हो या विस्मृति हो, उसे भी बाप को सौंप हल्के हो जाओ।
ना ही स्वयं की गलती पर ... ना ही दूसरों की गलती पर समय बरबाद करो ... अर्थात् हर बात में अपना कल्याण समझ पुरुषार्थ करने में तत्पर रहो...।

बस अलबेले मत होना ... ना ही मैं और मेरेपन में फँसना ...।

आप बच्चों को सच्चे दिल से बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ करना है, सम्पन्न तो आपको बाप ही बनायेगा...।

तब ही तो अचानक और आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा...।

बस, बाप पर और स्वयं के विजयी रत्न बनने पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त रहो ... अर्थात् क्या, क्यों, कैसे में मत फँसो..., फिर देखना बाप की कमाल अर्थात् wait and watch...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सब अपने पुरुषार्थ में तत्पर रहो...।

अभी minor सा भी अलबेलापन वा लापरवाही ना हो, क्योंकि अब समय नहीं बचा है कि अभी भी पुरुषार्थ ऊपर-नीचे होता रहें...!

वैसे भी बहुत जल्दी ही वातावरण में तमोप्रधानता का प्रभाव अत्यधिक बढ़ जायेगा अर्थात् आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जायेगा...!
और जिस आत्मा ने अपने ऊँच स्वमान और बाप को combined रखने का ऊँचा पुरुषार्थ नहीं किया है, वो समय के बहाव में बह जायेगा और उस आत्मा के लिए मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन है...!

इसलिए, बिना कुछ सोचें स्वयं पर attention रख, ऊँचा पुरुषार्थ करो...।

जब आप बच्चों का स्वयं पर परिवर्तन का full attention है अर्थात् परिवर्तन नज़र आ रहा है, और ऊँच स्वमान में स्थित हो बाप को याद करने का attention है, तो आप बेफिक्र रहो ... आपका ज़िम्मेवार बाप है...।
बस अलबेले मत बनना।

बाप का आकर यूँ पढ़ाना, और इस समय किये गए पुरुषार्थ की value बहुत जल्दी आपको महसूस होगी।

जिन्होंने अपना समय सफल किया होगा, उनकी तो बाप के साथ-साथ, वाह-वाह होगी..., और अन्य आत्मायें जो बाप की विशेष पालना लेकर भी खाली ही रह गई, उनपर क्या बीतेगी..., वो तो आप सोच ही सकते हो...!

बस, बाप की एक-एक बात पर निश्चय रख पुरुषार्थ करो।

"अभी नहीं ... तो कभी नहीं ..."

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... धर्मराज कोई भी आत्मा वा परमात्मा नहीं है।

जिस तरह, रावण ... पाँच विकारों के रूप को कहा जाता है, इसी तरह हर आत्मा के किये गये पापकर्म, धर्मराज का रूप ले लेते हैं।
जिस कारण पापकर्म करने वाली आत्मा भयानक सज़ाओं का अनुभव करती है...!

बाप तो सभी बच्चों के लिए हमेशा कल्याणकारी रहता है - चाहे वो लौकिक हो ... चाहे अलौकिक...।

देखो, सबसे पहले स्वयं के द्वारा किये गए पापकर्म स्वयं के आगे प्रत्यक्ष होंगे..., फिर अन्य आत्माओं के सामने...! जिस कारण वो बाप के सहयोग का फायदा नहीं उठा पायेंगी...!
अर्थात् उनके पापकर्म ही उनको बाप से साक्षी कर देते हैं।
जिस कारण उनकी भोगना और बढ़ जाती है और यह वो आत्मायें होती है;
• जो बाप के प्यार के आधार को छोड़ दूसरे-दूसरे आधार पर चलती हैं।
• स्व-परिवर्तन की बजाए अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना चाहती हैं।
• सुखकर्ता की बजाए दु:खकर्ता बन जाती है अर्थात् dis-service के निमित्त बन जाती है...।
यही कर्म उनकी सज़ाओं के निमित्त बनते हैं, और यह कार्य शुरु हो चुका है ... अर्थात् जो कहते हो ना कि सद्गुरु का role शुरु हो जायेगा ... वो हो चुका है...।

कोई भी कार्य पहले slow होता है, फिर जल्दी वो प्रत्यक्ष रूप में दिखने लगता है...!

अष्ट रत्न ... सौ रत्न ... अर्थात् सभी माला के दाने स्वयं के पुरुषार्थ अनुसार स्वयं ही प्रत्यक्ष होते हैं, जोकि सभी आत्माओं को मान्य होते है।

बाप का कार्य सभी आत्माओं को केवल प्यार, रहम, कल्याण की भावना से मुक्ति और जीवनमुक्ति देने का है।
परन्तु, सभी अपने मन्सा-वाचा-कर्मणा द्वारा नम्बरवन और नम्बरवार बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप बच्चे तो बाप के मीठे-मीठे, मस्तकमणि बच्चे हो।
बाप, आप बच्चों के सच्चे दिल के प्यार को देखता है, इसलिए स्वयं आ गया पढ़ाने के लिए...।

अब बिल्कुल बेफिक्र रह महीनता से अपनी checking कर, स्वयं पर attention रख, स्वयं को change कर, बाप की पालना का ... पढ़ाई का ... सबूत दो।

अब किसी भी बात में ... कोई भी बात में ... कोई भी बच्चा अलबेला मत बने...।

बाप तो समय की समीपता को देख, आप बच्चों को रोज़ समझानी दे रहा है...!

बस, आप बच्चे बाप की छोटी से छोटी समझानी पर भी 100% निश्चय रख पुरुषार्थ करो...।
बाप नहीं चाहता कि बाप के किसी भी बच्चे को पश्चाताप करना पड़े..!
परन्तु पुरुषार्थ आप बच्चों को ही करना है।

इसलिए हर पल अपने पर attention रखो।

देखो, बाप कहता है कि स्वयं को बेफिक्र बादशाह, हल्का, खुश और सन्तुष्ट रखना है। इसकी checking महीनता से करनी है।

कई बार कर्म करते भी आपका powerful connection बाप के साथ होता है, परन्तु आप अनुभव नहीं कर पाते...!
और यही सोचते हो कि बैठकर तो योग किया नहीं...!
बैठकर योग लगाना बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है, परन्तु कर्मयोगी की stage भी कम नहीं...।
बस इसमें कर्म consicous होने के बजाए कर्मयोगी अर्थात् स्वयं को आत्मा समझ, बाप के साथ combined रहने का बहुत अभ्यास चाहिए।

इसके लिए आप स्वयं की checking भी कर सकते हो...।

यदि आप महसूस करते हो कि आपके अन्दर ज्ञान-गुण-शक्तियां अर्थात् स्वयं की तरफ attention भी बढ़ रहा है और परिवर्तन भी हो रहा है, तो आप अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट रहो..., और यदि आप बच्चे बार-बार disturb हो जाते हो, तो आपको बाप की याद के साथ-साथ स्वयं के व्यवहार की तरफ attention भी बढ़ाना पड़ेगा।
इसकी speed तीव्र रखनी पड़ेगी क्योंकि समय बहुत थोड़ा है, और जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जा रहा है, तो पुरुषार्थ भी मुश्किल होता जायेगा...!

इसलिए, जो थोड़ा-सा समय बचा है उसमें बाप के सहयोग और समय का फायदा उठा पुरुषार्थ कर लो।

योग के साथ-साथ स्वयं के परिवर्तन पर full attention रखना है।

यह पढ़ाई ही है मनुष्य से देवता अर्थात् तमोगुणी आत्मा को परिवर्तन कर सतोगुणी आत्मा बना देने की..., इसलिए check and change...

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आप सब आत्माओं को परमपिता परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध निभा वरदानीमूर्त बनना है।

वरदानी मूर्त बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे...।
और जो बच्चे बेफिक्र बादशाह और हल्के होंगे, उनका ही बाप के साथ सम्बन्ध अटूट होगा।

अब आप बच्चों को सदा स्वयं पर attention रख, स्वयं को check करना है कि मैं शान्त स्वरूप और हल्का हूँ...?
क्योंकि हल्की आत्मा ही बाप के समीप पहुँच, बाप-समान बन पायेगी ... और किसी भी तरह के बोझ वाली आत्मा का खिंचाव धरती की तरफ होगा...!
फिर बताओ, वो बाप-समान कैसे बनेगी...?

इसलिए, अब बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ कर बाप-समान बनो।

अब यह ही थोड़े का भी थोड़ा समय है - “अभी नहीं तो कभी नहीं...।”

यह बाप का प्यार कहो ... पढ़ाई कहो ... तपस्या कहो ... यह सब बाप-समान बनाने के लिए ही है।

यदि आपके अन्दर ज्ञान-गुण-शक्तियां बाप-समान नहीं आ रही हैं ... चाहे कोई भी कारण है, इसका मतलब आपके अन्दर अलबेलापन है...!

इसलिए बहुत समझदारी के साथ स्वयं की checking कर, स्वयं को बाप-समान बनाओ।

यदि आप हर पल हल्के, बेफिक्र, सन्तुष्ट और खुश रहते हो ... तो इसका मतलब आपका connection बाप के साथ है ही है।

इस प्रकार की आपकी checking हर पल की होनी चाहिए अर्थात् सदा की...।
• सदा मतलब - हर स्थिति और परिस्थिति के समय...।

• हल्का अर्थात् किसी भी प्रकार की कोई भी आसक्ति नहीं ... बेफिक्र, चिन्तामुक्त, समर्पणभाव, सन्तुष्ट, स्वयं से ... बाप से ... अन्य आत्माओं से ... no complaints...।
• खुश अर्थात् मान-अपमान, निन्दा-स्तुति अर्थात् हर परिस्थिति में भी खुश...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सबको अब समय अनुसार अचल, अडोल और एकरस रहना है, चाहे परिस्थिति कितनी भी हलचल वाली हो...!

एक knowledgeful और powerful अर्थात् सर्व शक्तियां, और उसमें भी विशेष शान्ति और पवित्रता की शक्ति होगी, वो आत्मा हर प्रकार की परिस्थिति में अचल-अडोल रहेगी...।

देखो, समय आगे बढ़ता जा रहा है, तो तमोप्रधान वातावरण का effect भी बढ़ रहा है।
जिस कारण तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ ही साथ दिनचर्या में छोटी-छोटी परेशान करने वाली परिस्थितियां भी बढ़नी है...।

परन्तु आप मास्टर सर्वशक्तिमान् बच्चों को हर हाल में अचल-अडोल रहना है।

इसलिए, स्वयं ही स्वयं की checking करो कि;
मैं हमेशा शान्त, केवल मुख का ही नहीं, मन की भी शान्ति रहती है...?
मैं हर्षितमुख रहता हूँ या परेशानियों को देख परेशान हो जाता हूँ...?

बच्चे, आपकी यह शान्तचित्त अवस्था ही आपको सम्पन्न बनायेगी।
आप स्वयं के साथ-साथ यह भी checking करो कि आपके घर में रहने वाली आत्माओं पर आपकी स्थिति का कितना प्रभाव है...?

यदि आप हमेशा हर्षितमुख, शान्त, अचल, अडोल रहते हो ... तो आपके घर के वातावरण पर भी आपके powerful vibrations का effect आयेगा, और अन्य आत्माओं में भी धीरे-धीरे परिवर्तन आ जायेगा...।

इसलिए, महीनता से checking करो...।

देखो बच्चे, आप बच्चों के परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन होगा।
परन्तु ... विश्व-परिवर्तन अर्थात् विश्व में शान्ति होने से पहले आपके घर में तो शान्ति होनी चाहिए ना...!
चाहे आपके परिवार में रहने वाली आत्मायें ज्ञान में ना भी चलें, वो खुश और शान्त तो रहें...।

जो बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं, वो अपनी मंज़िल के समीप है।
बस, अब उनको थोड़ा और attention रख अपनी मंज़िल पर पहुँचना है ... इसलिए वो 'एक बल-एक भरोसा' रख पुरुषार्थ करते रहें...।
उन्हें बहुत जल्द अपने पुरुषार्थ के powerful results दिखने शुरु हो जायेंगे..।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं के ऊँचे स्वमान के स्मृति स्वरुप बनो।

आपको हर पल यह याद रहना चाहिए कि मैं कौन हूँ और किसका हूँ...?
यही स्मृति आप बच्चों को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेगी।

जब आप अपने परिवार के सम्बन्ध में आते हो तो आपका हंसना, बोलना, मज़ाक करना, गुणों से भरपूर बहुत natural और सहज होता है ... परन्तु, संगठन के बीच आपको स्वयं पर full attention रखना है।

जिस तरह देवता बहुत royal, हर्षितमुख, मधुर, soft, रहमदिल, क्षमाशील, कल्याण आदि गुणों से भरपूर रहते हैं, इसी तरह यह सभी गुण आप बच्चों में प्रत्यक्ष दिखने चाहिए।
सभी को लगें, कि यह हमसे अलग हैं...!
और यह सभी गुण आप बच्चों से तब प्रत्यक्ष अनुभव होंगे, जब आप बच्चे स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित रखोगे।

ऊँच स्वमान में स्थित होना अर्थात् आपको अन्दर से अनुभव होना चाहिए कि मैं ही इतनी ऊँच authority हूँ, जिसे पूरे विश्व का कल्याण करना है...।

इसलिए अब अपने ऊँचे स्वमान को अनुभव करो...।
स्वयं की शक्तियों को, गुणों को अनुभव करो...।

बस थोड़ा-सा attention रखोगे अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों को अपनी दिनचर्या में use करोगे, तो सहज ही यह आपके गुण और शक्तियां आपके संस्कार बन जायेगे...।

देखो बच्चे, बाप तो आया ही है सबको सम्पन्न बनाने ... परन्तु जो स्वयं पर attention रख स्वयं बनेंगे, वो तो थोड़े ही समय में प्रत्यक्ष होना शुरु हो जायेंगे और जिन्हें बाप बनायेगा वो अन्त में होंगे...!

फिर देखो, दोनों के आनन्द के समय में कितना अन्तर आ जायेगा और पद में भी...!

इसलिए, बाप का स्नेह और सहयोग लो ... अर्थात् बाप से बुद्धियोग लगा, स्वयं पर attention रख स्वयं ही स्वयं को सम्पन्न बनाओ ... तो प्राप्तियां अपरमअपार है अन्यथा, आप स्वयं ही समझदार हो...!

जो बच्चे जितने निश्चय के साथ बाप की हर श्रीमत का पालन कर पुरुषार्थ कर रहे हैं, उन आत्माओं से अन्य को प्रत्यक्ष परिवर्तन अनुभव होगा...।

देखो, यह ना हो कि सम्पन्न बनने की list में आने की बजाए, देखने वाले बन जाओ...!
अभी भी थोड़ा-सा समय है ... तो अपना कुछ भाग्य तो बना लो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, श्रीमत् प्रमाण पुरुषार्थ भी कर रहे हैं और अपने गृहस्थ व्यवहार में भी उसी प्रमाण चल रहे हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार है...।
अब उन बच्चों का प्राप्तियों का समय बहुत जल्दी ही शुरु होगा, तो उन्हें किसी भी प्रकार की कोई कमी महसूस नहीं होगी।

और कुछ ही समय में, अर्थात् बहुत थोड़े से भी थोड़े, उसमें से भी थोड़े समय में उनके जीवन में आये हर तूफान, तोहफे में परिवर्तन हो जायेंगे...।
तो वो बिल्कुल निश्चिन्त रहें।

अब तो उनका तन, मन, धन, जन अर्थात् चारों तरफ का स्नेह-सहयोग, उन्हें प्रत्यक्ष करेगा।

क्योंकि बाप स्वयं वरदानीमूर्त बन 100% उनका साथ निभायेगा..., तभी तो ऐसे बच्चों की जयजयकार होगी...।

दूसरी तरफ;
जो बच्चे अभी भी समय को देख, दुनिया को देख पुरुषार्थ कर रहे हैं, वो स्वयं के जवाबदार स्वयं है...!

इस समय भी बाप का, अपने ऊँच भाग्य का, फायदा नहीं उठा रहे हैं, उनकी क्या गति होगी...?
उन्हें देख बाबा को बहुत रहम आता है, फिर बाबा भी कहता है - ड्रामा...।

इस समय तो बाप एक का पदमगुणा दे रहा है, परन्तु बच्चे हिम्मत का, दृढ़ता का एक कदम भी ना उठाए, तो बताओ बाप भी क्या करें...?

अब जल्दी ही पुरुषार्थ का समय खत्म हो जायेगा, और हर आत्मा अपने किए गए पुरुषार्थ के according अपनी seat पर set हो जायेगी।

इसलिए बच्चे, बचे हुए थोड़े से समय में अपना कुछ तो भाग्य बना लो...!

जो करेगा-सो बनेगा...।
यह drama का नियम है, इसमें बाप भी बँधा हुआ है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा जबसे आप बच्चों को direct पालना दे direct पढ़ाई पढ़ा रहा हैं, तबसे जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ किया है, उन बच्चों में purity की power अर्थात् अनादि संस्कार emerge होते जा रहे हैं...।

जिस कारण उनका पुरुषार्थ सहज होता जा रहा है ... और बहुत जल्दी ही उन बच्चों का प्राप्तियों का period शुरु हो जायेगा ... फिर वो बाप समान बन, बाप के साथी बन, बाप (परमात्मा शिव) के कार्य में सहयोगी बनेंगे ... और वो बच्चे direct बाप के सहयोगी, साथी अर्थात् उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि मैं बाप के साथ विश्व-कल्याण का कार्य कर रहा हूँ...।
बाप से सर्व संबंधों के प्यार का, वो बच्चे clear अनुभव करेंगे...।

और जो बच्चे अभी भी पुरुषार्थ में अलबेले हैं या पुरुषार्थ में अपनी मनमत चलाते हैं, तो बताओ उनकी क्या गति होगी...?

इसलिए, फिर भी अभी थोड़ा समय है, तो अपना भाग्य बना लो ... अन्यथा बिल्कुल थोड़े के थोड़े समय के बाद यह पुरुषार्थ और मुश्किल होता जाएगा ... क्योंकि एक तो आपके अलबेलेपन का संस्कार पक्का होता जाएगा और दूसरा वातावरण का प्रभाव दिखाई देगा ... और कुछ ही समय के बाद तो मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जायेगा...! क्योंकि तब तो बाप भी साक्षी हो जायेगा...!

इसलिए बच्चे, स्वयं पर attention बढ़ा, और बाप के सहयोग का फायदा उठा दृढ़ता की शक्ति के द्वारा ऊँचा पुरुषार्थ करो।

अभी तो थोड़े का पदमगुणा मिल रहा है, तो फिर अपना भाग्य बना लो।

ऐसा ना हो अंत में केवल पछताना पड़े..., क्योंकि पछताने की घड़ियां बहुत कड़ी है...!

यूँ मत समझना कि बाबा ऐसे ही कह रहा है...!

जो बाबा इस समय special आकर पढ़ा भी रहा है, तो समझानी भी दे रहा है और जो समय की चेतावनी दे रहा है ... वो भी accurate अर्थात् 100% सत्य बता रहा है...।

इसलिए गफलत में रह अपने भाग्य को लात मत मार देना...!

बाबा के एक-एक शब्द को attention से सुन फिर पुरुषार्थ करो...।

अभी तो बाबा प्यार भी कर रहा है और प्यार भरी समझानी भी दे रहा है ... परन्तु बहुत जल्दी बाप साक्षी हो जाएगा और आपके ही अलबेलेपन के संस्कार ... छोटी-छोटी बात में दिलशिकस्त होने के, थकने के, हारने के संस्कार अर्थात् आपकी ही कमी-कमज़ोरी पश्चाताप में परिवर्तन हो जायेगी।

इस बात को हल्का मत समझना और इस समय आपको दुनिया को ना देख पुरुषार्थ करना है।

बाप special पढ़ाने आया है और special समझानी दे रहा है, तो आप भी special बनो, दुनिया वालों की तरह नहीं...!

बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ करने वाले बच्चे, बाप के मस्तक मणि, नूरे रत्न, दिलतख्तनशीन बच्चे हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो यह आपका ईश्वरीय परिवार है, यह विशेष आत्माओं का परिवार है...। तो विशेषताओं से सम्पन्न आत्मा को ही विशेष आत्मा कहेंगे...।
इसलिए, अब आप सबको हर आत्मा के गुणों को ही देखना है...।

देखो बच्चे, बाप आप सबके आपसी स्नेह से प्रत्यक्ष होगा, तो अब परिवार की हर आत्मा को समीप लाओ और उनके ऊपर जो पुराने स्वभाव-संस्कार थोड़े बहुत बचे हैं उसे ignore कर, उनको केवल विशेष आत्मा समझ उनके सम्बन्ध में आना है ... और वैसे भी आप जो आधार हो, तो आपकी शुभ-भावना, शुभ-कामना अर्थात् संकल्पों की शक्ति से वो परिवर्तन हो अपनी विशेषताओं के स्मृति स्वरुप बनेंगे...।

इसके लिए आप बच्चों को फ्राकदिल बनना पड़ेगा, तेरा-मेरा की भावनाओं से न्यारा होना पड़ेगा। आपकी ज़िम्मेवारी पूरे परिवार की है, ना कि केवल कुछ एक आत्माओं की...!

इसलिए, अब अपने शुभ संकल्पों के द्वारा इनको परिवर्तन करो ... इन सबके परिवर्तन में ही आप बच्चों का परिवर्तन समाया हुआ है...।

जितना-जितना आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बढ़ता जाएगा, उतना ही आप सबके कल्याणकारी बनते जाओगे।

जो आपके संबंध-संपर्क में आने वाली आत्मायें हैं और बाबा की शिक्षाओं को समझ practical life में use कर रही है, वो सब आत्मायें आपके ही परिवार की है।
इसलिए, अब आप उन आत्माओं के प्रति भी ऊँची दृष्टि रखो...।

देखो, बाबा स्वयं आकर अपना कार्य कर रहा है अर्थात् बाबा की planning के according ही आप सब बच्चे नज़दीक संबंध-संपर्क में हो...। तो अब तेरा-मेरा की भावना को छोड़, हर आत्मा को आप-समान समझ उनके प्रति कल्याण की भावना रखो।

बस, बाबा पर 100% निश्चय रख जैसे बाबा कहें, वैसे करते जाओ ... तो फिर बहुत जल्दी ही बाबा की कमाल शुरु हो जायेगी...।

बस, इसके लिए आपको हर कदम बाप की श्रीमत प्रमाण उठाना है।
हर कदम अर्थात् हर संकल्प बेहद में हो...।

जो भी परिस्थितियां आ रही है, वो केवल आपके हिसाब-किताब clear करने के लिए आ रही है ... और जैसे ही आपका हिसाब-किताब जोकि थोड़े का भी थोड़ा सा बचा है, खत्म होते ही आप सब भरपूर हो जाओगे...।

देखो, बाबा इस ईश्वरीय परिवार को पूरे विश्व के आगे sample के रुप में प्रत्यक्ष करेगा, तो वो परिवार पहले तो 100% भरपूर होगा, तभी तो विश्व के आगे प्रत्यक्ष होगा...!

बस बाबा की इन शिक्षाओं को हल्का ना समझ, इनकी importance को समझ, इसे अपनी practical life में apply करो ... फिर जल्दी ही बाबा की कमाल शुरु हो जायेगी...।

यह आपका ईश्वरीय परिवार है तो विशेष आत्माओं का परिवार, फिर भी, है तो नम्बरवार...!
सो जो जितना पुरुषार्थ करेगा उतना number आगे ले लेगा...।

इसलिए,
अब माला में number का आधार आपका पुरुषार्थ ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार मन की एकाग्रता को बढ़ाओ अर्थात् जब चाहो, जितना समय चाहो, मन-बुद्धि को अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित कर सको...।

बच्चों का एकान्त में, अर्थात् जब मन-बुद्धि में कोई हलचल ना हो तो उन्हें योग में अच्छी अनुभूति होती है।
अब बच्चों के अन्दर एक ही लगन है कि हम बाप की श्रीमत को 100% follow करें और दुनिया से वैराग्य भी आया है।

परन्तु अब आप बच्चों का स्मृति का switch, ON रहना चाहिए अर्थात् जब भी किसी संगठन में या किसी भी प्रकार की हलचल में हो, तो भी आपको अपनी आत्मिक स्थिति की स्मृति रहें ... या फिर आपको बार-बार अर्थात् दिन में कई बार, बाप के साथ का अनुभव हो..., उसी स्थिति में आप पर संगठन का वा हलचल का प्रभाव नहीं पड़ेगा अन्यथा आपका समय बहुत व्यर्थ जाता है।

बच्चों के अन्दर पुरुषार्थ की लगन अच्छी है और सफलता भी मिल रही है। बस अपनी तरफ थोड़ा-सा attention और बढ़ाओ, फिर सहज ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे।

देखो, यह मार्ग बिल्कुल सहज है, बस आप बच्चों को attention ही तो रखना है..., परन्तु सोच-सोच कर परिस्थितियों से न्यारा होने की बजाए, उसमें फँस complaint स्वरुप मत बनना ... क्योंकि इसमें आपका ही 100% अकल्याण समाया है और इससे आपकी परिस्थितियां बढ़ेगी, घटेगी नहीं..., क्योंकि किसी से भी complaint होना अर्थात् अपना हिसाब-किताब लम्बा करना...।

देखो, drama में वो ही repeat हो रहा है जो कल्प पहले हुआ था, परन्तु आपको स्वयं को विजयी रत्न समझ इन परिस्थितियों को सहज रीति पार करना है, तभी आप समय से पहले अपनी मंज़िल पर पहुँच पाओगे ... अन्यथा आप भी समय के बहाव में बह जाओगे।
फिर बाप भी कुछ नहीं कर पायेगा...।

इसलिए, ATTENTION PLEASE...

जो कुछ drama में हो रहा है, उस हर scene में अपना कल्याण समझ अपने पुरुषार्थ को complete करो, अन्यथा पश्चाताप की घड़ियां बहुत कड़ी है...!

दुनिया में हाहाकार होने से पहले आपको अपना पुरुषार्थ पूरा करना है अर्थात् अपनी स्व-स्थिति और परमात्मा के सहयोग द्वारा अपना हिसाब-किताब पूरा करना है।

Complaint स्वरूप आत्मा बाप का सहयोग भी नहीं प्राप्त कर सकती...! इसलिए, स्वयं ही स्वयं की महीनता से checking कर अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करो, तभी आप तीव्र पुरुषार्थी की list में आओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप निश्चिन्त रहो।
आप हर बात में हाँ-जी, हाँ-जी करते रहो। स्वयं भी हल्के रहो और दूसरों को भी हल्का रखो...।

देखो बच्चे, किसी भी बात को instant मना मत करो, उस समय मुस्कुराकर उस बात को हल्का कर दो।
फिर अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो, बाप को संग रख, अपने दिल की बात कह दो...।

यदि फिर भी कोई अपनी बात ऊपर रखें तो उनके अनुसार चलो परन्तु वातावरण को भारी मत करना, ना ही स्वयं की सोच से, ना ही उस आत्मा की सोच से..., बस स्वयं के संकल्प को भी तेरा-तेरा कर दो और उस आत्मा को भी। फिर जल्दी ही वो आत्मा भी परिवर्तन हो जायेगी...।

अब तो उन आत्माओं पर भी आपकी vibrations का प्रभाव पड़ रहा है।
बस वो आपको परिवर्तन करने के निमित्त है, इसलिए स्वयं के स्वभाव-संस्कार को बिल्कुल flexible बना लो।

जितना-जितना आपके अन्दर moulding power आती जायेगी, उतनी ही आपकी शुभ भावना, शुभ कामना उन आत्माओं को परिवर्तन कर देगी।

बस, आप स्वयं पर attention रखना। खुद को किसी भी बात में भारी मत करना।

जब present में रहोगे अर्थात् ना ही past का सोचोगे और ना ही future का..., बल्कि present में रह हर संकल्प को बाप को समर्पण कर हल्के और निश्चिन्त रहोगे, तो जल्दी ही आप सभी में एक बड़ा परिवर्तन अनुभव करोगे...।

बस, उन आत्माओं के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखना...।

देखो बच्चे, आपके परिवर्तन से ही वो आत्मायें परिवर्तन होगी। फिर आपके स्थान का वातावरण भी परिवर्तन होगा।
फिर ही तो आपका स्थान light house - might house बनेगा...।

बस, हर बात में positive रहना है...।

जब आप बच्चों पर बाप की नज़र है और आप बच्चे भी हर कदम बाप की श्रीमत प्रमाण उठाते हो, तब तो हर बात में कल्याण ही कल्याण है...।

देखो, बाप आप बच्चों को आप समान बनाने आया है ... तो आप भी अपना full सहयोग दो।

बस, हर संकल्प को तेरा-तेरा करते चलो, निश्चय रखो और निश्चिन्त रहो।
बस फिर तो देखते ही देखते मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा बच्चों को देख रहा था...।
तो बाबा ने देखा कि बच्चों का स्वयं प्रति attention भी बढ़ा है और स्व-परिवर्तन की percentage भी बढ़ी है...।

परन्तु अभी भी बच्चे बीच-बीच में मूँझ जाते हैं और सोचते हैं, सारा दिन योग थोड़े ना ही लग सकता है...!

देखो बच्चे, कौन कहता है सारा दिन योग लगाओ...?
बाप तो केवल यही कहता है ... बच्चे, परमात्मा से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव करो...।

समीप सम्बन्ध को निभाने में सोचना नहीं पड़ता कि कैसे निभाएं...?

लौकिक में तो सभी सम्बन्ध स्वार्थ वश हैं, चाहे तो एक percent, चाहे तो सौ percent ... परन्तु परमात्मा बाप तो आप बच्चों के साथ सभी सम्बन्ध निःस्वार्थ निभाता है।

बस, मन में बाबा कहा और बाबा हाज़िर...।

बाप तो बच्चों के सच्चे दिल पर न्यौछावर हो जाता है।
जब बच्चे सच्चे दिल से बाबा को याद करते हैं, तो बाप भी मदद के लिए हर पल हाज़िर रहता है।
बस दिल सच्चा होना चाहिए...!

यह नहीं कि प्राप्तियों के समय तो सच्चा दिल हो और थोड़ी-सी भी हलचल हो, तो स्थिति हलचल में आ जाए और बाप को छोड़ आत्माओं में फँस जाए...!
इसे सच्चा दिल नहीं कहा जाता...।

सच्चा दिल ... अर्थात् हर समय अर्थात् हर अच्छे और परिस्थिति वाले समय में भी बाप पर 100% निश्चय ... ‘‘एक बाप, दूसरा ना कोई’’ - इसे कहा जाता है, सच्चा दिल...।
तुम्हीं संग बैठूँ, तुम्हीं संग खाऊँ, तुम्हीं संग मिलन मनाऊँ ... हर हाल में...।

आप बच्चों को बाप पर 100% निश्चय होना चाहिए कि कुछ भी हो रहा है उसमें हमारा, केवल हमारा 100% कल्याण समाया हुआ है।

बाप हर पल हमारा सहयोगी बन हमारा साथ निभा रहा है - इतना निश्चय, इसे कहते हैं ... ‘‘एक बल एक भरोसा’’...।

देखो, बाबा बार-बार कह रहा है कि बाबा सहज से सहज रीति पुरुषार्थ भी करा रहा है और सहज से सहज रीति हिसाब-किताब भी चुक्तु करवा रहा है। इसलिए बाप पर 100% निश्चय रख, बाप जैसे कहें वैसे करते चलो।
फिर बाप आपका 100% ज़िम्मेवार है ... और समय आते ही बाप आपको सम्पन्न और सम्पूर्ण बना, इन तूफानों से बचा, अपने संग ऊपर बिठा लेगा।
बस, थोड़ा-सा धैर्यता पूर्वक पुरुषार्थ करते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.01.2019

★ 【 आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे स्वयं पर 100% attention रख श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं अर्थात् उनका attention, केवल स्वयं को परिवर्तन करने का ही है ... उन बच्चों की ज़िम्मेवारी बाप की है, अन्यथा नहीं...!

देखो बच्चे, यदि आप किसी भी आत्मा को शुभ भावना - शुभ कामना से समझानी देते हो और वो उसे positively accept कर लेती है और आपकी स्थिति भी एकरस रहती है, तो भल उसे समझानी दो अन्यथा उसे बाप हवाले कर दो ... और स्वयं की सम्भाल रखो कि उसका प्रभाव आप पर ना पड़े...!

यदि उसके vibrations आप पर effect डाल रहे हैं, तो आप अपनी seat पर set हो बाप से शक्ति ले, शक्तिशाली बनो...।

देखो, जो यह कल्प का अंतिम से भी अंतिम समय जा रहा है, जिसमें बाप (परमात्मा शिव) ने आपको केवल स्व-स्थिति के आसन पर बैठ स्वयं को परिवर्तन करने की श्रीमत दी है, तो उसी प्रमाण चलो...।

व्यर्थ में अपना एक second, waste मत करो, क्योंकि कई बार एक second आपको भारी कर, कई minutes में परिवर्तन हो जाता है...!

इसलिए अब समय की बचत कर, समय को सफल करो...।

आप बच्चों की ज़िम्मेवारी स्वयं को बाप-समान बनाने की है, साथ ही साथ अन्य आत्माओं की पालना अच्छी तरह करने की है।
आपकी पालना और आपके शुभ-भावना के vibrations से वो स्वयं परिवर्तन होंगे...।

देखो, बनेंगे तो नम्बरवार ना..., सब first नहीं बन सकते...!

इसलिए सबसे पहले अपनी स्थिति की तरफ attention रखो।

गायन भी है;
"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन..."

देखो बच्चे, बाप स्वयं आकर आप बच्चों को सहज से सहज रीति पुरुषार्थ की विधि बता रहा है, तो उसी according पुरुषार्थ करो, फिर बाप भी आपको अपने समान बना लेगा...।

बाप के 100% आज्ञाकारी बनो, मोटे रूप से checking मत करो...।

देखो, आप बच्चे कल्प-कल्प के विजयी हो, तो आप बच्चे भी स्वयं के पुरुषार्थ प्रमाण अर्थात् स्व-परिवर्तन प्रमाण, स्वयं को अच्छी तरह जान और मान स्वयं पर attention रखो...।

स्व-परिवर्तन के लिए हर बात से, हर किसी के part से, न्यारा होना अति आवश्यक है।

जितना न्यारा, उतना प्यारा ... अर्थात् जो बच्चा बाप का प्यारा है, वो तो स्वतः ही सबका प्यारा हो जायेगा...।

जो वरदानीमूर्त बच्चे होते हैं, वो इस पाँच तत्वों से बनी दुनिया की हर चीज़ से न्यारा बन सबको वरदान दे, सभी के कल्याण के निमित्त बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बाबा बच्चों के पुरुषार्थ को check कर रहे थे।
तो बाबा ने देखा कि, बच्चों को बाबा से बहुत प्यार है, बच्चे ज्ञानी भी हैं और योगी भी हैं ... परन्तु संस्कार परिवर्तन करने में नम्बरवार है...।

स्वयं को परिवर्तन कर नहीं पाते, इसलिए परमात्मा से और अन्य आत्माओं से किसी ना किसी तरह की complaint रहती है। जिस कारण ऐसी आत्मायें अन्दर से ना तो संतुष्ट रहती हैं और ना ही हल्की..., फिर बताओ यह कैसा पुरुषार्थ है...?

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है...,
• संस्कार परिवर्तन करो।
• स्वयं की checking करो, बाप की श्रीमत प्रमाण...।
• मैं-मेरे में मत फँसो।
• सब कुछ समर्पण कर दो...।

परन्तु जब आप मैं-मेरे में फँस जाते हो, तो जैसेकि आप अज्ञानी आत्मा हो...।

देखो, यह समय फिर नहीं मिलेगा...। अभी आप चाहे कितने भी complaint स्वरूप बनो परन्तु अंत में अपना part देखकर स्वयं ही पश्चाताप करना पड़ेगा...!
यह ही फिर कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...!

देखो, इस मार्ग में किसी भी तरह की कोई भी complaint ना स्वयं से अर्थात् स्वयं के भाग्य से, ना परमात्मा से और ना ही अन्य आत्माओं से होनी चाहिए।

इसके लिए बाप की हर श्रीमत को महीनता से समझ, अपने जीवन में apply करो।

आप बच्चों की सारी पढ़ाई बाप ने सार में भी और विस्तार में भी अच्छी तरह से पढ़ा दी है, अब त्रिकालदर्शी बन स्वयं को check कर, change करो...।

अभी फिर भी थोड़ा-सा समय बचा है, उसे सफल करो ... अन्यथा पश्चाताप की घड़ियां बहुत कड़ी है।

रास्ते में किसी भी तरह की कोई भी परिस्थिति, कोई भी स्वभाव-संस्कार आये, उसे जल्दी से जल्दी अपने स्वमान की seat पर set हो बाप को दे दो।

यदि, उसे थोड़ी देर भी अपने पास रख लोगे तो उसे निकालना मुश्किल हो जायेगा...!

इसलिए, ATTENTION PLEASE...

सहज रीति पुरुषार्थ कर आगे बढ़ो, जब तक हिसाब-किताब clear नहीं होंगे, तब तक सम्पन्न नहीं हो पाओगे...!

इसलिए, हल्के हो हिसाब-किताब clear करो, ना कि भारी होकर...।

बाबा की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही है। समय आते ही बाप स्वयं आपको ऊपर उड़ाकर ले जायेगा।

देखो, जब भी कोई पुराना हिसाब-किताब आता है और आप शांति-पूर्वक बाप पर निश्चय रख, सच्चे दिल से पुरुषार्थ करते रहते हो ... तो बाप भी जल्दी ही किसी-न-किसी युक्ति के द्वारा आप बच्चों को मुक्ति दिला देता है ... और जब आप भारी हो जाते हो, तो वो ही हिसाब किताब लम्बा हो जाता है...!

अच्छा, आप बच्चों को तो पता है कि बाप अभोक्ता है, फिर भी आप भोग स्वीकार करवाते हो...!

परन्तु अब समय अनुसार जबकि बिल्कुल अंतिम घड़ियां चल रही है, ऐसे समय में आपको भोजन के समय full attention रखना है ... क्योंकि इस समय सब कुछ तमोप्रधान है और बाप की याद में रह स्वीकार की गई एक-एक bite सतोप्रधान बन, आपके मन और तन को तंदुरुस्त कर देती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, यह drama का अन्त का भी अन्त अर्थात् climax period अर्थात् हिसाब-किताब चुक्तु करने का समय चल रहा है।
इसलिए, सबसे पहले drama के hero पार्टधारी अर्थात् त्यागी, तपस्वी आत्माओं के हिसाब-किताब किसी भी रूप में चाहे तन, मन, धन, जन, सम्बन्ध, सम्पर्क के द्वारा चुक्तु होने हैं...।

परन्तु, जितना आपका योग powerful होता जायेगा और जितना आप इस दुनिया से न्यारे हो तेरा-तेरा करते जाओगे, उतना ही आपका हिसाब-किताब हल्का होता जायेगा।
बस, आप बच्चों को योग के साथ-साथ संकल्पों द्वारा बाप (परमात्मा शिव) पर समर्पण होना है।

यदि आप परिस्थितियों को देख परेशान होते हो ... अर्थात् आपके अन्दर मैं और मेरा है...!

जब सबकुछ बाप हवाले हो गया तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं...!

देखो बच्चे, आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का अपना-अपना हिसाब-किताब है, जो उन्हें ही चुक्तु करना पड़ेगा ... चाहे योग के द्वारा, चाहे भोगना के द्वारा...।
इसलिए, आपको उनसे (बुद्धि से) detach रहना है।

जब आप detach होकर उन्हें सकाश दोगे, तो उनका भी कल्याण होगा...।
नहीं तो मैं-मेरे में फँसी आत्मा किसी को सकाश नहीं दे सकती और ना ही वह स्वयं का कल्याण कर सकती है और ना ही दूसरों का...!